राजीव सभरवाल

इतवार के दिन

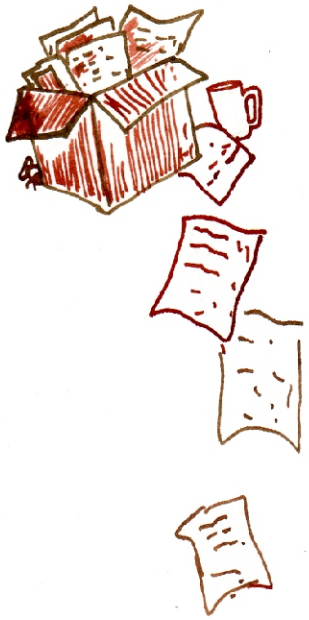

इतवार के दिन
सुबह देर से होती है

बेहद पीली होती है
इतवार की दोपहर
और शाम उजली-नीली

रात का रंग
सोमवार की याद में
काला ही रहता है

इतवार के दिन बार-बार
घड़ी नहीं देखी जाती है
वैसे भी वह धीरे चलती है

वर्षों बाद सुना जाता है
रेडियो इस दिन
खँगाले जाते हैं पुराने कागज़

दोस्त आ सकता है
इतवार के दिन
पर कोई चिट्ठी नहीं

चित्रः कनक

यह बहुत मशहूर जानवर है। कद में अक्ल से थोड़ा बड़ा होता है। चौपायों में यह वाहिद (एकमात्र) जानवर है कि मौसीकी से ज़ौक (शौक) रखता है। इसलिए लोग इसके आगे बीन बजाते हैं। किसी और जानवर के आगे नहीं बजाते।

भैंस दूध देती है, लेकिन वह नाकाफी होता है। बाकी दूध ग्वाला यानी दूधवाला देता है और दोनों के बाहमी तआवुन (परस्पर सहयोग) से हम शहरियों का काम चलता है। तआवुन अच्छी चीज़ है, लेकिन दूध को छान लेना चाहिए कि उसमें से मेंढक निकल जाएँ।

भैंस

इब्ने इंशा

भैंस का घी भी होता है। बाज़ार में हर जगह मिलता है। आलुओं, चरबी और विटामिन से भरपूर। लेकिन ज़्यादा तफसील में नहीं जाना चाहिए।

आजकल भैंस अण्डे नहीं देतीं। मिर्ज़ा गालिब के ज़माने में दिया करती थीं। हुकमा (हकीम लोग) पहले रौंगने-गुल (फूलों का तेल) भैंस के अण्डे से निकाला करते थे। यह कई अमराज़ (रोग) के लिए मुफीदतरीन (फायदेमन्द) साबित होता है।

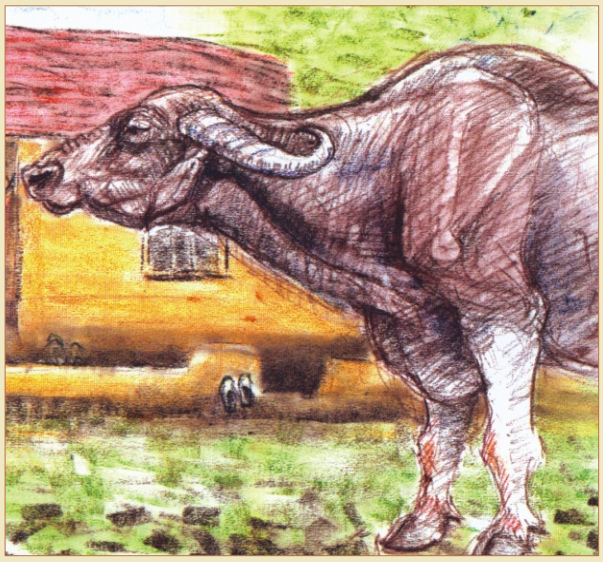

चित्रः योची यामागाटा